ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.19, No.3, July – Sept. ,2024/13

अखण्ड राष्ट्र के पुरोधा श्याम प्रसाद मुखर्जी : एक ऐतिहासिक दृष्टि

पंकज कुमार शुक्ल, शोध छात्र, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
https:// 10.61410/had.v19i3.197

सिंह का कभी राज्याभिषेक नहीं होता तभी तो अपने पराक्रम से वह स्वतः ही ''मृगेंद्र'' पद को प्राप्त करता है। यह युक्ति वन के प्राणियों के लिए ही नहीं मानव के व्यवहार में भी चरितार्थ होती हैं। भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष और भारतीय लोकसभा में विरोधी पक्ष के प्रमुख नेता डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी अपनी विद्वता और वाकपटुता एवं महान व्यक्तित्व के कारण लोकप्रिय हैं। संसार में ऐसे कम लोग हैं जिन्होंने जीवन के केवल 52 साल के अंतिम 14 साल राजनीति में बिताए हों और इसी अल्पावधि में यह महानतम ऊंचाई को छूकर इतिहास में अमर हो गए हो। डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी इनमें से एक थे। उनका जन्म 8 जुर्ला 1901 को कलकत्ता में हुआ था। ''बांग्लार बाघ'' अर्थात् बंगाल टाइगर के नाम सुविख्यात महान शिक्षाविद सर आशुतोष मुखर्जी (1864–1924) के दूसरे पुत्र डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भी अपने जीवन का प्रारम्भ एक शिक्षाविद तथा एक वकील के रूप में किया था। कलकत्ता विश्वविद्यालय में शानदार शैक्षणिक रिकार्ड तथा स्नातक एवं स्नातकोत्तर परीक्षा में सर्वोच्च स्थान पाकर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कोलकाता उच्च न्यायालय में ''इंडियन बार'' के सदस्य बनने के लिए कानून का अध्ययन किया और इसके बाद बैरिस्टर बनने के लिए इंग्लैण्ड रवाना हो गए जिससे कि वह ''इंग्लिश बार'' में सदस्य बन सकें। लेकिन उनके इंग्लैण्ड जाने का मूल उद्देश्य ब्रिटेन मे विश्वविद्यालयों की कार्य प्रणाली का अध्ययन करना था। उन्होंने यही किया और कलकत्ता विश्वविद्यालय की सिंडिकेट में केवल 23 साल की उम्र में सबसे युवा सदस्य थे। सिर्फ 33 साल की उम्र में वह विश्वविद्यालय के उप कुलपति बन गए और विश्वविद्यालय के संचालन में नए प्राण डाल दिए। इस पद पर रहते हुए भारतीय दृष्टिकोण से भारतीय इतिहास में गम्भीर शोध करने के इच्छुक राष्ट्रवादी विद्वानों को उन्होंने भरपूर सहयोग व समर्थन दिया।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने विदेशी विश्वविद्यालयों को भी आमंत्रित किया । अपने शोधार्थियों को भारतीय सभ्यता संस्कृति और संस्कृत भाषा का अध्ययन करने के लिए यहां भेजें। उन्होंने भाषाओं को खूब बढ़ावा दिया और गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर को विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में बांग्ला भाषा में उद्बोधन के लिए निमंत्रित किया। यह पहला अवसर था जब किसी विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में किसी भारतीय भाषा में भाषण दिया गया।

हिन्दुओं के लिए ऐसे कठिन समय में जब बंगाल मे मुस्लिम लीग का शासन था, श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अकादमिक एकांतिकता को त्याग कर राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने का निर्णय लिया। उन्होंने हिन्दू महासभा में प्रवेश लिया और इस तरह वह सीधे राजनीति में आ गए। राजनीति में उनके प्रवेश का स्वागत खुद महात्मा गांधी ने किया क्योंकि वह डॉ0 मुखर्जी के विचारों से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने कहा था ''मालवीय जी के बाद हिन्दुओं को नेतृत्व देने वाला कोई चाहिए था। ''डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने इसके जवाब में कहा ''लेकिन आप मुझे सांप्रदायिक कहेंगे।'' इस पर गांधी जी ने कहा था ''जिस तरह समुद्र मंथन के बाद भगवान शिव का विषपान किया था, उसी तरह भारतीय राजनीति के विष का पान करने वाला भी कोई होना चाहिए। वह आप हो सकते हैं।''

वर्ष 1941 में श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने फजलुल हक की कृषक प्रजा पार्टी की मदद से बंगाल में सरकार बनाने में सफलता हासिल की और मुस्लिम लीग को सत्ता से दूर कर दिया।

महात्मा गांधी और सरदार पटेल की पहल पर स्वतंत्र भारत के पहले मंत्रिमंडल में शामिल होने के लिए श्यामा प्रसाद मुखर्जी को आमंत्रित किया गया। संविधान सभा में अपनी मजबूत उपस्थिति और संविधान निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका के साथ–साथ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने स्वतंत्र भारत के पुनः औद्योगिककरण के लिए दूरदर्शिता और बुद्धिमत्तापूर्ण दृष्टिकोण का परिचय दिया। चाहे वह रक्षा उत्पादों का स्वदेशीकरण हो या भारत को सैन्यशक्ति सम्पन्न राष्ट्र बनाना हो या फिर प्रौद्योगिकी उन्नयन हो या कौशल दिव हो डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी इसके प्रणेता रहे। उन्होंने भारतीय उद्गो को बढ़ावा दिया और किसी संबंधी ज्ञान पर खूब जोर दिया।

अक्टूबर 1951 में जनसंघ की स्थापना के समय उन्होंने नई पार्टी की भविष्य की दिशा तय करते हुए कहा था नई पार्टी इस प्रकार से राजनीति एवं कार्य करेगी जिससे भारतीय संदर्भ प्रदर्शित हो। उन्होंने कहा ''भारतीय जनसंघ का उदय अखिल भारतीय राजनीतिक पार्टी के रूप में हुआ है जो प्रमुख विपक्षी दल के रूप में कार्य करेगी। हमने जाति, पंथ या समुदाय में भेद किए बना इस पार्टी को सभी भारतीय नागरिकों के लिए खुला रखा है जबकि हम यह मानते हैं कि परम्परा रिवाज, मजहब और भाषा के आधार पर भारत विविधताओं वाला देश है। मातृभूमि के प्रति गहरा समर्पण एवं निष्ठा से संप्रेरित होकर समझदारी एवं बंधुभाव के साथ लोग एकजुट होगा। फिर भी भारत के बहुसंख्यकों की जिम्मेदारी बनती है कि अपनी मातृभूमि के लिए पूर्ण समर्थित और निष्ठावान सभी लोगों को आश्वस्त करें कि कानून के तहत् उन्हें पूरी सुरक्षा प्रदान की जायेगी और सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक मामलों में उनके साथ समानता का व्यवहार किया जाएगा। हमारी पार्टी यह आश्वासन बिना किसी पूर्वाग्रह के देती है। हम यह मानते हैं कि भारत का भविष्य भारतीय संस्कृति और मर्यादा के पालने तथा प्रोत्साहन में ही निहित है।

वर्ष 1951–52 में प्रथम आम चुनाव के बाद डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी भारत की पहली संसद मे ंविपक्षी राजनीति को संगठित करने वाले विराट नेता के रूप में सामने आए। सभी विपक्षी दल विशाल और एक छात्र कांग्रेस को झुकाने के लिए नेतृत्व एंव दिशा निर्देश हेतु डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी की तरफ देखते थे। श्यामा प्रसाद मुखर्जी सरकर के कामकाज पर गहरी नजर रखते थे एवं सरकार की जवाबदेही, कामकाज के तरीके और निष्पक्षता पर बोलते थे।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी का अंतिम संघर्ष भारत के एकीकरण के लिए रहा। जब उन्होंने भारतीय गणराज्य के साथ जम्मू कश्मीर के पूर्ण विलय को अपना ध्येय बनाया। उनका नारा था ''एक देश एक संविधान, एक प्रधान'' इस चुनौती को उन्होंने एक महानायक के रूप में स्वीकारा और स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की सरकार द्वारा गिरफ्तारी को भी झेला।

बात जब भारत की एकता और इसकी संप्रभुता को बरकरार रखने की हो तो दुनिया की कोई भी ताकत श्यामा प्रसाद मुखर्जी को पीछे नहीं धकेल सकती थी। श्यामा प्रसाद मुखर्जी कहते थे, ''कैसी विडंबना है कि जो देश की अखण्डता बनाए रखना चाहते हैं वह सांप्रदायिक बताएं जाते हैं और जो मजहब के आधार पर मुसलमानों के लिए देश का विभाजन करने को तैयार हो गए अथवा कश्मीर को स्वतंत्र मुस्लिम राज्य बनाने को तैयार हैं वह नेशनलिस्ट हो गए।''

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी, एक सक्षिप्त जीवनी – पंडित दीन दयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाभियान 2015 भारतीय जनता पार्टी
2. एक देश – एक संविधान, डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी रिसर्च फाऊंडेशन, 9 अशोक रोड नई दिल्ली, सितम्बर 2019
3. भारतीय जनसंघ, नीतियां एवं घोषणा–पत्र।
4. एकात्म भारत का संकल्प, डॉ मुखर्जी और जम्मू कश्मीर 1946, 1953 देवेश खंडेलवाल।
5. दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय।
6. जम्मू कश्मीर और लद्दाख : यात्रा एकात्मकता की – अरूण कुमार
7. बलराज मधोक, पोट्रेट ऑफ मर्तायर (1954) पुनमुद्रित नई दिल्ली, रूपा एंड कम्पनी 2001।
8. तथागत रायए द लाइफ एण्ड टाम्स ऑफ डॉ0 श्यामा मुखर्जी, नई दिल्ली प्रभात प्रकाशन 2012
9. प्रशांतो कुमार चटर्जी, श्यामा प्रसाद मुखर्जी एण्ड इंडियन पॉलिटिक्स, नई दिल्ली कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस 2010